

Home / अन्य / महाशिवरात्रि पर आचार्य प्रशांत की...

महाशिवरात्रि पर आचार्य प्रशांत की विशेष नाट्य प्रस्तुति, ज्ञान-कला और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम प्रस्तुत



15 Feb 2026 10:13 PM



महाशिवरात्रि पर दार्शनिक और लेखक आचार्य प्रशांत हमारे लिए कुछ नया और गहरा लेकर आए। उन्होंने एक खास नाट्य प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति में कला के प्रति उनका लगाव और ज्ञान के प्रति उनका समर्पण एक साथ दिखाई दिया।

उनका यह प्रदर्शन दिखाता था कि थिएटर लोगों को गहरी आध्यात्मिक बातों को समझाने में कितना असरदार हो सकता है। यह प्रस्तुति उनके विद्यार्थियों के लिए प्रेम-उपहार बनी। आचार्य कठिन से कठिन आध्यात्मिक बातों को आसान भाषा में समझाने के लिए जाने जाते हैं।

हजारों लोगों ने महाशिवरात्रि पर आचार्य प्रशांत को सुनने के लिए आवेदन किया था, लेकिन इसके लिए कुछ ही लोगों का चयन हुआ। लगभग 2,000 प्रतिभागियों का चयन उनकी सच्चाई और आत्म-शिक्षा के प्रति समर्पण के आधार पर किया गया था। इस भव्य आयोजन में एक विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

प्रदर्शनी में पिछले छह महीनों के दौरान उनके 18 शहरों के दौरे की झलकियां दिखाई गईं। इसमें भारत के कुछ प्रमुख शिक्षण संस्थानों, खासकर 13 आईआईटी, प्रख्यात आईआईएम, और आईआईएस में हुए सत्र शामिल थे। इस दौरे के दौरान आचार्य ने 200 से अधिक सत्र किए। उन्होंने प्रेम और ईर्ष्या से लेकर एआई और वैश्विक घटनाओं तक, सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर दिए।

आचार्य प्रशांत ने अपने नाटक को लेकर समाचार एजेंसी आईएनएस से बातचीत में कहा, "यह ड्रामा न तो हमारे अंदर के झूठ को सामने लाने के लिए था और न ही सिर्फ हमें लाचार, कमजोर या रोता हुआ दिखाने के लिए। इसने एक गहरा सवाल पूछा कि क्या तुम सच में कमजोर हो, या तुमने अपनी तथाकथित कमजोरी में स्वार्थ पैदा कर लिया है? यह युवाओं के सामने एक चुनौती थी—क्या तुम सच में कमजोरी में जीना चाहते हो? खुद को लाचार घोषित करके तुम्हें क्या मिलेगा? कुछ सुविधाएं मिल जाती हैं, कुछ स्वार्थ पूरे हो जाते हैं। क्या इसकी कीमत यह है कि उसके लिए जीवन को दुर्बलता, दासता और बंधन में गुजार दो?"

आचार्य प्रशांत कहते हैं, "श्रीमद्भगवद्गीता कोई आम प्रवचन नहीं है, यह जिंदगी के युद्ध के मैदान में बोली गई धर्म की आवाज है। ऐसा नहीं है कि कोई शांत आश्रम, हिमालय की कोई चोटी, नदी का किनारा या किसी पेड़ की छांव हो, जहां सीखने के लिए उत्सुक शिष्य आते हैं और कोई गुरु उन्हें सिखाता है। नहीं, यह युद्ध है। यह अपने ही खून के खिलाफ युद्ध है, इच्छा के खिलाफ युद्ध है।"

उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र में जो कुछ भी हुआ, वह आज भी जारी है, इसलिए आज का युवा गीता के संदर्भ और उसके उपदेशों में अपने लिए बड़ी समकालीन उपयोगिता देखता है। ऐसा लगता है जैसे वह बात अर्जुन से नहीं, बल्कि आज के युवाओं से कही जा रही हो। जैसे वह बात हजारों साल पुरानी न होकर आज के संदर्भ में हमसे कही गई हो, जैसे अर्जुन हम ही हों। जब युवा यह

आचार्य प्रशांत न कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता आज का समस्याओं का सबाधत करता है। एस म युवाओं की श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति स्वाभाविक रुचि होती है। हमारा जो गीता समागम कार्यक्रम है, उससे हजारों लोग जुड़ चुके हैं, क्योंकि सभी के भीतर यही पुकार होती है कि झूठ और बंधन में नहीं जीना है।

अस्वीकरण: यह न्यूज़ ऑटो फ़ीड्स द्वारा स्वतः प्रकाशित हुई खबर है। इस न्यूज़ में BhaskarHindi.com टीम के द्वारा किसी भी तरह का कोई बदलाव या परिवर्तन (एडिटिंग) नहीं किया गया है। इस न्यूज़ की एवं न्यूज़ में उपयोग में ली गई सामग्रियों की सम्पूर्ण जवाबदारी केवल और केवल न्यूज़ एजेंसी की है एवं इस न्यूज़ में दी गई जानकारी का उपयोग करने से पहले संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों (वकील / इंजीनियर / ज्योतिष / वास्तुशास्त्री / डॉक्टर / न्यूज़ एजेंसी / अन्य विषय एक्सपर्ट) की सलाह जरूर लें। अतः संबंधित खबर एवं उपयोग में लिए गए टेक्स्ट मैटर, फोटो, विडियो एवं ऑडियो को लेकर [BhaskarHindi.com](https://www.bhaskarhindi.com) न्यूज़ पोर्टल की कोई भी जिम्मेदारी नहीं है।

Tags

राष्ट्रीय

